

कुहरा पुं. (तद्.कुहेरिका) वायु में जल के अत्यंत सूक्ष्म कणों का समूह जो ठंड पाकर वायु में मिली हुई भाप के जमने से उत्पन्न होता है, ये जलकण पत्तियों पर पड़ कर बूंदों के रूप में दिखाई पड़ते हैं।

कुहराम पुं. (अर.) 1. विलाप, रोना पीटना, आर्तनाद, बावेला 2. हलचल।

कुहरी स्त्री. (तद्.) हल्का कुहरा, कुहेलिका।

कुहासा पुं. (देश.) कुहरा, कुहेसा।

कुही स्त्री. (देश.) एक प्रकार की शिकारी चिड़िया जो बाज से छोटी होती है।

कुहुक पुं. (अनु.) पक्षियों का मधुर स्वर।

कुहुककार पुं. (अनु.) कपटी, छली।

कुहुकना अ. क्रि. (अनु.) पक्षियों का मधुर स्वर में बोलना।

कुहुकबान पुं. (देश.) एक प्रकार का बाण, जो बाँस की कई पट्टियों को जोड़ कर बनाया जाता है और जिसे चलाते समय कुछ शब्द निकलता है।

कुहू स्त्री. (तत्.) 1. वह अमावस्या जिसमें चंद्रमा बिल्कुल दिखाई न दे अर्थात् जो चतुर्दशी अथवा प्रतिपदा से विद्ध न हो 2. अमावस्या की अधिष्ठात्री देवी और अंगिरा ऋषि की कन्या, जो उनकी श्रद्धा नाम की स्त्री के गर्भ से उत्पन्न हुई थी 3. प्लक्ष द्वीप की एक नदी 4. मोर या कोयल की कूक।

कुहूकंठ स्त्री. (तत्.) कोयल, कोकिल।

कुहूकाल पुं. (तत्.) अमावस्या का दिन।

कुहू-कुहू स्त्री. (तत्.) मयूर या कोयल की बोली।

कुहेलिका स्त्री. (तत्.) 1. कुहरा 2. कुहरे के कारण फैला अंधकार।

कूंग पुं. (देश.) एक यंत्र जिस पर कसेरे पीतल, तांबे के बरतन खरादते और जिला (कलई) करते हैं। खराद। चरखा।

कूंगा पुं. (देश.) बबूल की छाल का काढ़ा जिसमें डुबो कर चमड़ा सिकाया जाता है।

कूँचा पुं. (तद्.) 1. किसी रेशेदार लकड़ी या मूँज आदि का कूट कर बनाया हुआ झाड़ू जिससे चीजों

को झाड़ते हैं 2. झाड़ू, बुहारी 3. टूटे हुए जहाज के टुकड़े।

कूँची स्त्री. (देश.) 1. छोटा कूँचा, छोटी झाड़ू 2. कूटी हुई मूँज या बालों का गुच्छा, जिससे चीजों का मैल साफ करते या उन पर रंग फेरते हैं जैसे- सफेदी करने की कूँची, सोनार की कूँची, तसवीर रंगने की कूँची मुहा. कूँची देना 1. कूँची में रंग चढ़ाना 2. कूँची से साफ करना 3. खेत को एक कोने से दूसरे कोने तक जोतना 4. चित्रकार के रंग भरने की कूँची, तूलिका स्त्री. (फा.) 1. कुल्हिया जिसमें मिसरी जमाई जाती है जैसे- कूँची की चीनी 2. मिट्टी का वह बरतन जिसमें कोल्हू से निकल कर रस इकट्ठा होता है।

कूँच/कूंच स्त्री. (देश.) 1. खस या नारियल के रेशे का बना हाथ डेढ़ हाथ लंबा एक बड़ा बुरुश जिससे जुलाहे ताने का सूत साफ करते हैं 2. लोहारों की बड़ी संड़सी।

कूँजड़ी स्त्री. (देश.) 1. कूँजड़े की स्त्री 2. वह स्त्री जो शाक भाजी बेचती हो।

कूँड़ स्त्री. (तद्.) 1. सिर को बचाने के लिए लोहे की ऊँची टोपी, खोद 2. चौंगोशिया टोपी के आकार का, मिट्टी या लोहे का गहरा बरतन, जिसे ढँकुल में लगाकर सिंचाई के लिए कुएँ से पानी निकालते हैं 3. वह गहरी लकीर जो खेत में हल जोतने से बन जाती है, कुंड 4. मिट्टी, तांबे या पीतल का बना गहरा पात्र जिसके ऊपर चमड़ा मढ़ कर 'बायाँ' या 'ठेका' बजाते हैं, तबले का बायाँ, डग्गा।

कूँड़ा पुं. (तद्.) 1. पानी रखने का मिट्टी का गहरा बरतन 2. छोटे पौधे लगाने का थाला, गमला 3. रोशनी करने की एक प्रकार की बड़ी हाँड़ी, जिसे ढोल भी कहते हैं 4. मिट्टी या काठ का बड़ा बरतन जिसमें आटा गूँथते हैं, कठौता, मठौता।

कूँड़ी स्त्री. (तद्.) 1. पत्थर का बना हुआ कटोरे के आकार का बरतन, पत्थर की प्याली, पथरी 2. छोटी नाँद 3. कोल्हू के बीच का वह गड़ढा जिसमें जाठ रहता है 4. सिर पर घड़ा आदि रखने से पहले सिर पर रखी जाने वाली गेंदुरी।